23 अक्टूबर 2023

कुछ बातें मन की... @रश्मि चौधरी

पढ़ना भी एक कला है जो जीवनपर्यंत बना रहे तो फिर कोई आकांक्षा हावी नहीं होती। दुनिया की सबसे खूबसूरत जगह अपनी किताब के साथ वह समय है जहां हम उस दुनिया को जीते है। कला और साहित्य और आपकी भाषा आपको एक दूसरे से जोड़े रखती है क्योंकि हर मनुष्य की पीड़ा और प्रेम दोनों ही ध्वनि की तरह इन तीनों से जुड़ी होती है। हम अपने स्वतंत्र विचारों से ही एक स्वस्थ साहित्य और सच्चा इतिहास लिख सकते है। लिखते समय हम उस समय को भी याद रखते है क्योंकि समय के साथ-साथ हम होते है, यानि कि उस समय को डक्यूमेंटेड कर रहे होते है। हर लिखनेवाला का समय अगले वाले के समय से भिन्न होता है।

सन 2007 में भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के 150 वर्ष पूरे होने पर Loreto college (लोरेटो कॉलेज) में जहां अंग्रेजी भाषा का ही वर्चस्प था, हिंदी में या अपनी क्षेत्रिय भाषा #लोक भाषा में बात करना उस समय से टकराना ही था। लेकिन आपकी भाषा में सच और तर्कपूर्ण विवेकशील बात हो जो एक नया मौलिक रचना या इतिहास रचता हो तो बात कहीं न कहीं सबके पास जरूर पहुंचती है।

अपनी क्षेत्रीय और लोक भाषा को पहचान करना और अधिक से अधिक मौखिक और लिखित स्रोतों को ढूढ़ना ही जमीनी यथार्थ से जुड़े समाज को सामने लाना है। इसी इतिहास को उस जमीन से उठाकर उस इतिहास के सामानांतर लाना चाहती हूं जो आज भी किसी राजनीतिक,सामाजिक और धार्मिक सरोकार से अलग पहचान बनाने के लिए बेचैन है। किसी बहुत विशेष दिन तिथि में जन्म लेकर भी साधारण मनुष्य उस दिन तिथि को ऐतिहासिक नहीं बना पाता कारण जो भी हो आखिर उसे क्यों अमहत्वपूर्ण माना जाता है, कभी कभी लगता है वहाँ तक दृष्टि ही नहीं पहुंच पाती या उसे अब भी अमहत्वपूर्ण ही मानकर छोड़ दिया जाता है।

जो कार्य 2005 में एक व्याख्यान श्रृंखला के रूप में अपनी बातों को बार बार दुहराते हुए शुरुआत की थी। इस बार 16वीं व्याख्यान माला के रूप में उत्तरप्रदेश के #बलिया और उनवास* में होने जा रहा है। इतिहास के दो योद्धा मंगलपांडे और चित्तू पांडे जो ग्रामीण क्षेत्र से आते है। उनका अपना इतिहास है, जो अभी भी लोक में वहां के लोगों द्वारा उनकी अपनी बनाई इतिहास है और वे उसे ही पूर्ण इतिहास मानते है।

अब एक इतिहास जो उनके साथ साथ चल रहा है और एक इतिहास जो हमारे सामने है कैसे दोनों को टकराना है यह भी समय की चुनौती है। इस बार #Creative History अपने इस प्रयास में कितना कुछ खंगाल पाएगी यह समय पर छोड़ती हूँ। 25 और 26 नवंबर 2023 को इस कार्यक्रम के तहत बहुत सी महत्वपूर्ण बातों पर विचार किया जाएगा। आज भी इन दोनों परिवार की छठी और चौथी पीढ़ी इतिहास से सवाल कर रही है। एक परिवार से मिलना जो उस समय की गाथा को अपने पूर्वजों के मुख से सत्य घटना को सुनते हुए खुद को गौरान्वित होते हुए इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान की मांग करती है।

कुछ नई बातें सामने आयें...और इस इतिहास के परे जो उस क्षेत्र के लोगों के अंतर्मन में उठती रचनात्मक प्रकिया है, क्योंकि लोक इतिहास की जो पारंपरिक कलाएं है वही कालांतर में इतिहास रचने की क्रिया में जरूर सहयोग करेगी। #जन की कला और जन का क्रोध इतिहास की प्रक्रिया के दो महत्वपूर्ण सूत्र हो सकते है...!!!
खोज निरंतर जारी रहे.
शुभकामनाएं चाहती हूं...!!